Dr. Ku. Sadhana Prasad
Associate Prof.
Dept of Psychology
H.D. Jain College Ara

20/04/2020

Study Material for P.G. Sem I

Topic Motivation & Emotion

Scanned by CamScanner

अनुप्रेरणा तथा संवेग (Motivation & Emotion)

अनुप्रेरणा या प्रेरक :—

परिचय या सम्प्रत्यय (conceptual analysis) :—

अनुप्रेरणा, अभिप्रेरणा, आवश्यकता, प्रेरक आदि पर्यायवाची शब्द हैं। संज्ञा के रूप में अनुप्रेरणा तथा क्रिया के रूप में प्रेरक कहना अधिक उपयुक्त है। प्रेरक एक आंतरिक शक्ति है जो प्राणी (पशु तथा मनुष्य) दोनों को किसी व्यवहार के लिए प्रेरित करती है तथा दिशा निर्देशित करती है। इस अर्थ में अनुप्रेरणा से 'प्रेरक' अधिक उपयुक्त है। इसकी परिभाषा & Newcomb ने इस प्रकार किया है :—

"अनुप्रेरणा प्राणी की वह अवस्था है जिसमें उसमें शारीरिक शक्ति संचालित होती है और चयनात्मक रूप से वातावरण के कुछ भागों की ओर निर्देशित करती होती है।"

" Motivation refers to the state of the organism in which bodily energy is mobilized and selectively directed toward some parts of the environment."

परन्तु McGeoch (1942) ने प्रेरक को ~~एक मनो है~~ प्राणी की एक मनोदैहिक अवस्था माना है जो उसे किसी व्यवहार को उपर्युक्त रीति से करने के लिए बाध्य करती है। ~~इसके अनुसार~~

McGeoch के अनुसार :— 'प्रेरक से तात्पर्य व्यक्ति की किसी ऐसी अवस्था से है जो उसे किसी कार्य के लिए दिशा निर्देश करती है तथा उस कार्य के समापन की उपयुक्तता निर्धारित करती है।'

Morgan तथा King (1976) ने एक ~~इसकी~~ एक आधुनिक परिभाषा इस प्रकार निर्धारित किया है —

'अनुप्रेरणा एक सामान्य शब्द है जो आवश्यकताओं द्वारा उत्पन्न तथा लक्ष्यों की ओर निर्देशित व्यवहार का संकेत करता है।'

" Motivation is a general term referring to behavior instigated by needs and directed towards goals."

अतः प्रेरक में निम्नलिखित मापदण्ड होते हैं :—

① उत्तेजित करने का मापदण्ड (arousing criterion) —

प्रेरक का प्रारम्भ किसी आन्तरिक दैहिक अवस्था से होता है जिसे आवश्यकता (Need) कहते हैं। यह प्राणी को उत्तेजित कर देता है जिससे प्राणी किसी व्यवहार के करने के लिए बाध्य हो जाता है।

Scanned by CamScanner

② दिशा निर्देशक मापदण्ड (Directing Criterion) —
प्रेरक या अभिप्रेरित व्यवहार उद्देश्यपूर्ण (Purposive) होता है अर्थात किसी निश्चित दिशा या लक्ष्य की ओर निर्देशित रहता है। अर्थात प्रेरक दिशा निर्देशित व्यवहार उत्पन्न करता है। प्राणी अपने उद्देश्य की दिशा अर्थात लक्ष्य (Goal) प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो जाता है। जैसे एक भूखा प्राणी भोजन प्राप्त करने की दिशा में और एक प्यासा प्राणी पानी प्राप्त करने की दिशा में सक्रिय हो रहता है।

③ समपोषण मापदण्ड (Sustaining Criterion) —
प्रेरक का तीसरा मापदण्ड यह है कि यह अभिप्रेरित व्यवहार को तब तक जारी रखता है जब तक प्राणी को प्रेरक की वस्तु अर्थात लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए और उसे संतुष्टि न मिल जाए। जैसे प्यासे प्राणी में पानी प्राप्त करने की दिशा में तब तक अभिप्रेरित व्यवहार जारी रहता है जब तक इसे पानी मिल न जाए और उसे प्यास की आवश्यकता की पूर्ति होकर संतुष्टि न मिले।

Hilgard ने इसे एक प्रेरणात्मक चक्र (Motivational Cycle) के द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस चक्र में अभिप्रेरणा या प्रेरक में तीन घटकों (Components) की चर्चा किया है —

① आवश्यकता (Need), ② प्रणोदन (Drive) तथा
③ प्रोत्साहन (Incentive)।

① आवश्यकता (Need) — प्राणी में दैहिक स्तर पर किसी अभाव की स्थिति को आवश्यकता (Need) कहते हैं। यह एक शक्ति के रूप में व्यक्ति के लिए ~~किसी~~ अभाव की वस्तु में विशेष मूल्य उत्पन्न कर देता है। प्राणी में आवश्यकता से एक असंतुलन या अभाव का अनुभव होने लगता है। इसके भी दो रूप होते हैं —
भूख, प्यास आदि को जो प्राणी के आंतरिक स्तर पर उत्पन्न आवश्यकता है उन्हें जैविक आवश्यकता (Biological needs) कहते हैं।

(ii) ~~प्रणोदन (Drive)~~ ऐसी आवश्यकताएँ जो प्राणी को वाह्य वातावरण से प्रभावित करती है उन्हें सामाजिक आवश्यकता कहते हैं जैसे - मानसम्मान, पारितोषित, शक्ति, प्रभुत्व आदि।

Scanned by CamScanner

② प्रणोदन (Drive) — यह प्राणी की वह आंतरिक शारीरिक अवस्था है जो किसी आवश्यकता से उत्पन्न होती है। अतः यह प्राणी की एक उत्तेजित अवस्था है जो प्राणी में किसी अभिप्रेरित व्यवहार को उत्पन्न करती है और उसे एक निश्चित लक्ष्य की ओर निर्देशित करती है जैसे भोजन के अभाव से उत्पन्न आवश्यकता (Need) से रक्त में कुछ ऐसे रासायनिक परिवर्तन होते हैं जिससे प्राणी में आंतरिक स्तर पर तनाव तथा बेचैनी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है इसी को भूख-प्रणोदन कहते है। प्राणी ऐसे प्रणोदन की अवस्था को दूर करने की दिशा में प्रयत्न करने लगता है। अतः आवश्यकता (Need) जहाँ शारीरिक तंतुओं में किसी अभाव से उत्पन्न होता है प्रणोदन एक मनोवैज्ञानिक अवस्था है जो आवश्यकता से उत्पन्न होता है और बेचैनी तथा आतुरता का अनुभव कराता है।

③ प्रोत्साहन (Incentive) — प्रोत्साहन एक बाहरी लक्ष्य की वस्तु (Goal object) होती है जो प्राणी को दिशा निर्देशित करता है और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है जैसे प्यासे व्यक्ति के लिए पानी लक्ष्य (Goal) होता है जिसे वह पाने के लिए दिशा-निर्देशित व्यवहार करता है इसीलिए पानी प्रोत्साहन है। प्रोत्साहन के दो रूप होते हैं। धनात्मक या धनात्मक प्रोत्साहन (Positive incentive) ~~तथा~~ ~~ऋ~~ नकारात्मक या ऋणात्मक प्रोत्साहन (Negitave incentive) धनात्मक प्रोत्साहन वह वस्तु होती है जिसे व्यक्ति पाने का लक्ष्य निर्देशित व्यवहार करता है जैसे - भोजन और विद्युत आघात ऋणात्मक प्रोत्साहन है जिनसे प्राणी बचने का प्रयास करता है। इस प्रकार आवश्यकता - प्रणोदन - प्रोत्साहन के रूप में प्राणी में प्रेरक जन्म से मरण तक क्रियाशील रहता है।

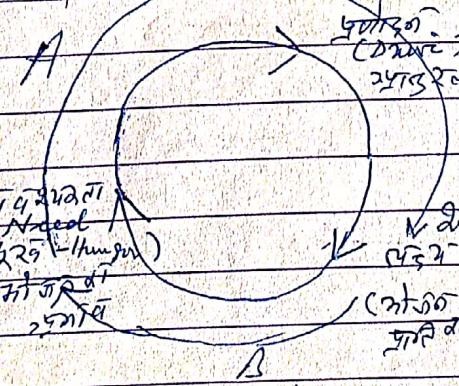

Hilgard

Need - Drive - Incentive cycle of Motive

A - आवश्यकता - प्रणोदन - प्रोत्साहन (लक्ष्य)
दिशा - निर्देशित - व्यवहार
लक्ष्य (Goal - directed behaviour)

B लक्ष्य (प्रोत्साहन) की प्राप्ति से संतुष्टि तक
प्रणोदन संतुष्टि प्राप्ति या व्यवहार (Consummatory behavi...